केनरा हैस्कूल सी.बी.एस.ई डोंगरकेरी, मंगलूर-3

सातवीं, आठवीं और नौवीं कक्षाओं के लिए

अपठित गद्यांश

गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तरों में से सही विकल्प चुनिए

गद्यांश 1

वार्तालाप की शिष्टता मनुष्य को आदर का पात्र बनाती है और समाज में उसकी सफलता के लिए रास्ता साफ़ कर देती है। मनुष्य का समाज पर जो प्रभाव पड़ता है, वह बहुत कुछ पोशाक और चाल-ढाल पर निर्भर रहता है, किंतु यह प्रभाव ऊपरी होता है और पोशाक का मान जब तक भाषण से पुष्ट नहीं होता, तब तक स्थायी नहीं होता। मधुरभाषी के लिए करनी और कथनी का साम्य आवश्यक है, किंतु कर्म के लिए वचन पहली सीढ़ी है। मधुर वचन ही विश्वास उत्पन्न कर भय और आतंक का परिमार्जन कर देते हैं। भाषा की सार्थकता इसी से है कि वह दूसरों पर यथेष्ट प्रभाव डाल उन्हें प्रसन्न भी कर पाए। शब्दों का जादू बड़ा ज़बर्दस्त होता है। मधुर वचनों के साथ यह आवश्यक है कि उनके पीछे भाव भी शिष्ट-मधुर हों, नहीं तो मुलम्मे के सिक्कों की भाँति बेकार रहेंगे। हृदय की मलिनता और मधुर वचनों का योग नहीं होता। वचन के अनुकूल जब कर्म होते हैं, तभी मनुष्य वंदनीय बनता है। हमारे चरित्र के असली परिचायक ही कर्म होते हैं, किंतु बिना मधुर वचनों के लोग दूसरों के सद्व्यवहार का भी लाभ नहीं उठाना चाहते।

प्रश्न

(i) मनुष्य समाज में आदर का पात्र कैसे बनता है?

(क) बुरे चाल-ढाल के कारण
(ख) शिष्ट वार्तालाप के कारण
(ग) खराब आचरण के कारण
(घ) हृदय की प्रसन्नता के कारण

(ii) मधुर वचनों का क्या प्रभाव पड़ता है?

(क) सुनकर अच्छे लगते हैं
(ख) अप्रसन्न करते हैं
(ग) विश्वास उत्पन्न करते हैं
(घ) शिष्टता प्रकट करते हैं

(iii) मधुर वचन कब प्रभावहीन हो जाते हैं ?

(क) स्पष्टता न होने पर
(ख) विश्वास होने पर
(ग) नकली सिक्कों की तरह होने पर
(घ) शिष्ट-मधुर भाव न होने पर

(iv) मधुर वचनों का किससे योग नहीं होता ?

(क) केवल मीठा बोलने से
(ख) भय और आतंक से
(ग) हृदय की मलिनता से
(घ) वचन और कर्म से

(v) किसके बिना लोग सद्व्यवहार को भी कुछ नहीं समझते ?

(क) मधुर वचन के बिना
(ख) बुरे चरित्र के बिना
(ग) कर्म के बिना
(घ) अच्छी सोच के बिना

गद्यांश 2

संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है। जब दो देशों या जातियों के लोग आपस में मिलते हैं तब उन दोनों की संस्कृतियाँ एक दूसरे को प्रभावित करती हैं। एक जाति का धार्मिक रिवाज़ दूसरी जाति का रिवाज़ बन जाता है और एक देश की आदत दूसरे देश के लोगों की आदत में समा जाती है। इसलिए संस्कृति की दृष्टि से वह जाति या वह देश बहुत ही धनी समझा जाता है जिसने ज़्यादा-से-ज़्यादा देशों या जातियों की संस्कृति का विकास किया हो। ऐसे देशों में भारत का नाम बहुत ही आदर के साथ लिया जाता है; क्योंकि यहाँ के लोग संस्कृति के मामले में बड़े उदार रहे हैं। यही नहीं, बल्कि, हम जिसे अपनी संस्कृति कहते हैं वह एक जाति या कुछ थोड़े-से लोगों की संस्कृति नहीं है, बल्कि, बहुत पुराने समय से जो अनेक जातियाँ इस देश में आती रही हैं उन सबकी संस्कृतियों के प्रभाव हमारी भारतीय संस्कृति पर पड़ते रहे हैं और उन्हीं प्रभावों को ठीक से अपने भीतर पचाकर हमारी संस्कृति इतनी विशाल और उदार हो गई है कि आज वह सारी दुनिया की संस्कृति का आईना बन सकती है।

प्रश्न

(i) संस्कृति किस प्रकार बढ़ती है---

(क) इतिहास के अध्ययन से
(ख) धार्मिक रिवाज़ बदलने से
(ग) आदान-प्रदान से
(घ) इनमें से कोई नहीं

(ii) भारत के लोग किस मामले में बड़े उदार रहे हैं---

(क) इतिहास रचने में
(ख) दुनिया बदलने में
(ग) देश का विकास करने में
(घ) संस्कृति के मामले में

(iii) 'संस्कृति' शब्द में उपसर्ग है—

(क) सन् (ख) स (ग) सम् (घ) संस्

(iv) सारी दुनिया की संस्कृति का आईना कौन बन सकती है?

(क) भारत की राजनीति (ग) विदेशी संस्कृति

(ख) भारतीय संस्कृति (घ) आदान-प्रदान की संस्कृति

(v) दिए गए गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है—

(क) भारतीय संस्कृति का प्रभाव (ग) लुप्त हो रही संस्कृति

(ख) जातियों के धार्मिक रिवाज़ (घ) विदेशी संस्कृति

गद्यांश 3

साहित्यशास्त्रियों ने रसों की संख्या नौ मानी है। समय बदल गया है। पुरानी मान्यताएँ 'आउट ऑफ डेट' होती जा रही हैं। एक साहित्य के विद्यार्थी से जब पूछा गया, "तुम्हें सबसे अच्छा रस कौन-सा लगता है?" उसने उत्तर दिया 'गन्ने का रस'—अध्यापक महोदय साहित्य में इस नए रस का नाम सुनकर चुप हो गए। इसी प्रकार यदि मुझसे पूछा जाए कि मुझे कौन-सा रस सर्वश्रेष्ठ लगता है तो मैं कहूँगा — निंदारस। सच पूछिए तो अपना तो यह हाल है कि मित्र न मिले, भोजन न मिले, सोने को न मिले, कोई नुकसान नहीं। किंतु यदि दूसरे की निंदा करने का सुअवसर प्राप्त न हो तो हमारा जीवन वीरान हो जाए। महँगाई के इस ज़माने में यदि सबसे सस्ता एवं सरल मनोरंजन का कोई साधन बचा है तो वह है परनिंदा। इसके लिए न किसी ऑडिटोरियम की आवश्यकता है और न किन्हीं अन्य उपकरणों की, न निमंत्रण पत्र छपवाने का झंझट, न सभा-सोसाइटी बनाकर चुनाव करने की किल्लत, न मासिक चंदा। कम-से-कम एक श्रोता अवश्य चाहिए और आप निंदारस का पूर्ण आनंद उठा सकते हैं।

प्रश्न

(i) समय के अनुसार क्या बदल गया है?

(क) परनिंदा के साधन (ग) रसों का आनंद

(ख) रसों की परिभाषा (घ) पुरानी मान्यताएँ

(ii) महँगाई के इस ज़माने में मनोरंजन का सबसे सस्ता साधन क्या है?

(क) कैरम बोर्ड (ख) क्रिकेट (ग) परनिंदा (घ) ताश के पत्ते

(iii) परनिंदा के लिए किसकी आवश्यकता है?

(क) पारखियों की (ख) श्रोताओं की (ग) सभा की (घ) महँगाई की

(iv) 'ऑडिटोरियम' किस प्रकार का शब्द है ?

(क) तत्सम (ख) तद्भव (ग) देशज (घ) विदेशी

(v) दिए गए गद्यांश का शीर्षक हो सकता है—

(क) परनिंदा (ख) महँगाई (ग) प्रशंसा (घ) साहित्य-रस

गद्यांश 4

क्या आप बता सकते हैं कि असल में भारतीय कौन हैं ? भारत है क्या ? या यों कहें कि भारत का रंग-रूप क्या है ? ऊँचे-ऊँचे पहाड़ या समतल मैदान, गरम मरुस्थल या बरसात में बाढ़ लानेवाली नदियाँ, हरे-भरे जंगल या बंजर धरती। ये सभी भारत के दृश्य हो सकते हैं। इसी तरह से फूस की झोंपड़ियों वाले गाँव के पास देशी हल से खेत जोतता हुआ अकेला किसान या महानगर की ऊँची-ऊँची इमारतों के नीचे भीड़ भरी सड़कें। धुआँ फेंकती मोटर कारें, बसें, ट्रामें या सुदूर जंगल का वह आदिवासी गाँव जहाँ के लोग अब भी तीर-कमान से शिकार करते हैं, या एक आधुनिक प्रयोगशाला जहाँ वैज्ञानिक अनुसंधान में लगे हुए हैं। इन सब सीमाओं के बीच ऐसे बहुत से दृश्य हैं जो एक-दूसरे से बिलकुल अलग हैं फिर भी आपस में जुड़े से लगते हैं। ये सभी भारत हैं। अब यह बात आसानी से समझ में आ जाएगी कि भारत को विविधताओं का देश क्यों कहा जाता है। हमारे यहाँ अनेक प्रकार के लोग, भाषाएँ, जलवायु और खान-पान हैं तथा यहाँ के लोग अनेक प्रकार के काम-धंधे करते हैं। राष्ट्र-प्रेम ही एक ऐसा भाव है जिसने सबको एक माला में पिरोकर रख दिया है।

प्रश्न

(i) भारत को विविधताओं का देश क्यों कहा जाता है ?

(क) अलग-अलग खान-पान के कारण (ग) विविध संस्कृतियों के कारण

(ख) रंग-बिरंगी वेशभूषा के कारण (घ) उपर्युक्त सभी सही हैं।

(ii) दिए गए गद्यांश में किसका वर्णन है ?

(क) वैज्ञानिकों का (ग) राष्ट्र-प्रेम का

(ख) भारत देश का (घ) जलवायु का

(iii) भारत की आधुनिक प्रयोगशालाओं में क्या काम होता है ?

(क) नए-नए बीजों की खोज (ग) वैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान

(ख) योजनाएँ बनाने का (घ) देश को एक करने का

(iv) भारतवासी अलग खान-पान, वेशभूषा आदि के बाद भी एक कैसे हैं ?

(क) राष्ट्र-प्रेम के भाव के कारण (ग) उन्नति और विकास के कारण

(ख) आधुनिक विचारों के कारण (घ) सभ्यता और संस्कृति के कारण

(v) इस गद्यांश का सही शीर्षक क्या होगा ?

(क) भारतीयता
(ख) विविधता में एकता
(ग) ज्ञान-विज्ञान की भूमि
(घ) प्राचीन और आधुनिक भारत

गद्यांश 5

दूसरों के सुख-दुख में सच्चे अंत:करण से दिलचस्पी लेना अच्छे संस्कार का लक्षण तो है ही, साथ ही व्यवहार-कुशलता भी है जो लोगों को हमारी ओर आकर्षित करती है। हाँ, इसमें दिखावा, बनावटीपन और ऊपरी-ऊपरी शिष्टाचार नहीं होना चाहिए। जो प्रशंसा सच्ची होती है, हृदय से निकलती है, वही हृदय को बाँध भी सकती है। ऊपर से कोई बड़ा आदमी कितना भी आत्मविश्वासी और आत्मतुष्ट क्यों न दिखाई दे, भीतर से वह हमारी-आपकी तरह प्रशंसा का, प्रोत्साहन का, स्नेह का भूखा है। यदि आप उसे प्रामाणिकतापूर्वक ले सकें तो आप फ़ौरन उसके हृदय के निकट पहुँच जाएँगे। दूसरों की भावनाओं को ठीक-ठीक समझना, उनकी कद्र करना, उनके साथ सच्चाई और स्नेह का व्यवहार करना यही व्यवहार-कुशलता है। इसी से सामाजिक जीवन में लोकप्रियता के दरवाज़े खोलने की कुंजी हाथ लगती है। इससे हमारी अपनी सुख-शांति बढ़ती है, सो अलग।

प्रश्न

(i) दूसरों के सुख दुख में दिलचस्पी लेना किसका लक्षण है ?

(क) उदारता का
(ख) अच्छे संस्कारों का
(ग) दिखावे का
(घ) निस्वार्थ भाव का

(ii) मानव हृदय को कौन बाँध सकता है ? बाँध सकता है ?

(क) आदर और प्रेम का अभाव
(ख) अपने गुणों की अवहेलना
(ग) सच्ची प्रशंसा
(घ) सम्मान और अपमान दोनों

(iii) व्यवहार कुशलता का अभिप्राय है—

(क) दूसरों की भावनाओं को समझना
(ख) सच्चाई और स्नेह का व्यवहार करना
(ग) दूसरों की भावनाओं की कद्र करना
(घ) तीनों सही है।

(iv) सामाजिक जीवन में लोकप्रिय होने के लिए आवश्यक है—

(क) व्यवहार-कुशल होना
(ख) शिष्टाचार निभाना
(ग) दूसरों की प्रशंसा करना
(घ) सच्ची भावना होना

(v) उपर्युक्त गद्यांश का शीर्षक है—

(क) प्रशंसा और निंदा
(ख) व्यवहार-कुशलता
(ग) शिष्टाचार और प्रशंसा
(घ) सच्चाई और स्नेह